

रामलोचन ठाकुरक बहुचर्चित कविता पोथी

## इतिहासहंता

किछु विचार

\* पढ़ि कऽ बड़ खुशी भेल । परम्परा के ओढ़नहु अहाँ 'परम्परा' सँ ततेक फराक बूझि पड़ैत छी जे लगैत अछि कोनो पुरान पीपर-पाकड़ि मे नव-नव लाल-लाल पल्लव लगल होए । की कऽ चाहैत छिअै से ततेक महत्त्वक नहि बूझल, जतेक कहवाक नव दंग आ स्थापना । आशा अछि, एहिना अहाँक स्वर सँ मैथिलीक मंदिर आंदोलित होयत रहत ।  
—आरसी प्रसाद सिंह

\* "इतिहासहंता"..... रामलोचन जी विद्रोहक कवि छथि । ओ सत्ताक विरोध केँ कविताक मुख्य विषय मानैत छथि । "इतिहासहंता" पुरनका पीढ़ी केँ उपराग देत अछि । ओहि सँ ओ जुड़ल तँ अछि आ ओकरा सह अपन "नोट ऑफ डिस्टेंस" देत अछि । कवि रामलोचन ठाकुर एकटा सर्वहारा भाषा बोलीक प्रणेता सेहो छथि जे अनेक मैथिली पत्रिका मे एखनो प्रचलित अछि ।..... रामलोचन जी युवा कवि सभ मे सभसँ फराक एकटा इस्तासुर छथि बनिक स्वर स्पष्ट आ दृढ़मुक्त अछि । समकालिन साहित्य मे ओ अपन फराक स्थान बना लेने छथि ।  
—जीवकान्त

\* "सोइहो कविता केँ पढ़ि अहाँ केर रचनात्मक प्रौढ़ता, राजनीतिक प्रति व्यंगात्मक दृष्टिकोण आओर महानगर बोध सँ प्रभावित भेलहुँ । 'अग्रजक नाम' कविता सन नीक रचना लिखऽक लेल हमर साधुवाद ।"..... "इतिहासहंता" क प्रकाशन १९७७ केँ कविताक क्षेत्र मे उपलब्धि वर्ष बना देलकैक ।

—कीर्ति नारायण मिश्र

\* हमरा बड़ नीक लागल । अहाँ जे वस्तु कविता मे कहऽ चाहैत छियेक से स्पष्ट अछि । मैथिलीक अधिकांश कविता जहाँ दुःख नहि ।—महेन्द्र मल्लगिया

\* पोथीक रूप मे अपनेक अग्निवाण सभ देखि, पढ़ि बड़ आनन्द भेल । कविता सभ बजैत दस्तावेज अछि ।  
—धनचक्र

\* हमरा 'मैथिली' बड़ नीक लागल—थीम आ' प्रजेन्टेसन, दुनू दिस सँ । अगिला कविता बड़ आकर्षक आ' परिच्छन्न सुभाषण ( नाटक, निर्देशक आ एक गोट कविता दय कहैत छी' ) । पहिल आठ गोट कविता मे सर्वोत्तम लागल 'अग्रजक नाम / हम बिसरि गेल छी' ।  
—नचिकेता

कुमारेश क/२५५

अ  
ता  
ल  
क  
पा

(१/८५-५/७)



# बेताल कथा

( हास्य-व्यंग )

कुमारेण व्याख्यान

विदेह पब्लिकेशन्स, कलकत्ता

कापी राइट : श्रीमती सीता देवी ठाकुर

प्रकाशक :

विदेह पब्लिकेशन्स,

६१-ए, चारु चन्द्र प्लेस ( इस्ट ),

कलिकाता-७०० ०३३

पहिल खेप : मई १९८१

दाम :—चारि टाका

**BETAL KATHA**

( Maithili Satire )

by : **Kumaresh Kashyap**

— सभर्पण —

॥

हास्य सम्राट

प्रोफेसर श्री हरिमोहन मा

क

सादर

—कुमारेश काश्यप



## कथा-क्रम

१ तोता मैना सम्वाद—अथ कथा चमचा पुराण प्रसंग	७
२ लाल बुभुक्षर—विद्यापतिक बली	१२
वेताळ कथा--	
३ कुर्सी महालय	१८
४ विलव	२२
५ ब्रह्माक श्राप	२५
६ उत्तर महाभारत	३०
७ अमरावती उपकथा	३५



## पूर्व कथ्य

मैथिली आन्दोलनक विसंगति सं उत्पन्न क्षोभ हमरा हास्य-व्यंग लिखवा लेल वाध्य कएलक । 'मिथिला भूमि' मे 'तोता मैना सम्वाद' हास्य स्तंभक हेतु सर्वप्रथम अथ कथा इजोतक खास प्रसंग' लिखि पठाओल । रचना पबिते मिथिला भूमिक सम्पादक 'सोमदेव' भाइक प्रशंसा-प्रोत्साहन भरल पत्र प्राप्त भेल आ जखन रचना छपलैक त तकर आशा सं बेसी प्रतिक्रिया हमरा आगू लिखवाक लेल, लिखैत जेबाक लेल बल देलक । फलतः कएकटा रचना प्रकाशित कराओल ।

किछु दिनक बाद कलकत्ता सं 'शिखा' बहार भेलैक । शिखा सम्पादक कुणाल-अग्निपुष्पक आग्रह पर बेताल कथा शीर्षक सं व्यंग लिखल जे प्रकाशित होइत रहलैक आ पाठकक नीक प्रतिक्रिया अबैत रहलैक ।

'शिखा' जखन बन्न जकां भ गेलैक त 'अग्नि पत्र' मे व्यंग स्तंभ देबाक विचार भेल परञ्च शिखा सम्पादक लोकनिक आग्रह पर 'बेताल कथा' शीर्षक नहि द 'लालबुभुक्षर' देमय पड़ल । दुखक बात जे अग्निपत्र मे सेहो एकेटा रचना प्रकाशित भेलैक कारण 'पत्र' बन्न भ गेलैक ।

एहि संकलन मे बानगीक रूप मे एगो तोता मैना सम्वाद आ एगो लाल बुभुक्षर द रहल छी । बाँकी सभ बेताल कथा ।

बेसी रचाना सभ स्वयं कहत ।

—कुमारेश काश्यप

## अथ कथा चमचा पुराण प्रसंग

सांस्कृतिक समय ! तोता आ मैना चाह पर बैसल । परंच 'टी टेबुल टॉक' क बिनु चाह—कम स कम मैना केँ अवस्से फिक्का बुझाइ छलनि । ओ मथोन भंग करैत तोता सं पुछलथिन ।

—अंय ये तोता ? एहि बेर अहाँ जहिया सं मैथिली पत्रिकाक सर्वेक्षण क क फिरलौं तहिया सं एना गुम-सुम किएक भेल रहैत छी ? एहि खेप त प्रवासी मैथिल लोकनिक कूनू समाचारों ने कहलौं ?

तोता माथ उठा मैना दिस तकलनि आ शान्त स्वरे वजलाह—अहाँकि चार्ज सवा सतरह आना सत्त अइ । परंच कारण कि छइ जनैत छी ? जं गप एक कान सं दू कान भेल तखन सगरो देश परसवे करत । आ से भेने एकदिस मैथिली-मिथिलाक क्षति होयतैक त दोसर दिस हमरा लोकनिक खोंता बिनु उजारने नहि रहत ।

—आखिर एहन गप कून छैक ?

—सम गप एहने छैक । कुनू एकदू गोठ रहितैक तखन ने फुटा क कहिनौं । ई त साधारणों आदमी सोचि सकैत अछि जे जल्द हला दिन-राति मिथिले-मैथिलीक होयत छैक, तखन कुनू उपलब्धि किएक ने भ रहल छैक ?

मैना केँ ई गप अनसोहांत लगलनि । ओ प्रतिपादक स्वर मे वजली—से की कहैत छी ये ? कुनू उपलब्धि कोना नहि भेलैकए ?

बेताल कथा



बिहार पब्लिक सर्विस कमीशन में मैथिलीक स्थान, मिथिला विश्वविद्यालयक स्थापना, साहित्य अकादमी में मैथिली

—विद्यापति डाक टीकस, मिथिला एक्स्प्रेस बीच सं लोकैत तोता बजलाह। कनहा कुकुर मांडहि तिरपित—कहबी कुनू बेजाय छैक। हम पुछैत छी जे मिथिला विश्वविद्यालय में अध्ययन-अध्यापन कून भाषा में होइ छइ? कार्यालयक काज कून भाषा में होइ छइ? बी०पी० एस०सी०क परीक्षा में मैथिलीक कते परीक्षार्थी रहैत छथि? कहै छइ किने जे पेट में खद ने आ सिंग में तेल। जड़ि के गड़ार खेने जाय आ पुनगी पर पानि ढारब। कते मुसहर धाड़रक धोया-पुता बी० पी० एस० सी० क नाम सुनने होयत? कतेक—मिथिलाक जनता केँ मिथिला विश्वविद्यालयक साइन बोर्ड सं पेट भरतैक?

—पा भरि तामस त खदखन अहाँक नाक पर रहिते अछि। जहाँ किछु पुछू त एहिना जबाब। हम पुछैत छी जे एहि सभ लेल कि प्रवासीये मैथिल वा मैथिली पत्र पत्रिकाए दोखी अइ?

—से त हम नहि कहलौं हे। तखन बेसी अबस्से। ओना सभसं बेसी दोखी त राजनैतिक महन्थ सभ आ ओकर चमचा सभ अछि जे सभ अन्न पानि खाएत मिथिलाक आ पहरा करत दिल्ली दरबारक। परंच मैथिली आन्दोलनक नाम पर जे महन्थ सभ अपन-अपन गोटी सुतारि रहल ए आ मैथिली आन्दोलन केँ दिगभ्रमित क रहल-ए, एकरा हौआ बना रहल ए तकरो लोकनिक कम दोख त नहि छैक।

—जं एहन बात छैक त एहि नेता लोकनिक वा महन्थे सभक मरम्मत कि एक ने करै ए लोकसभ?

चाहक चुस्की आ चौअनिआ मुस्को दैत तोता बजलाह—मरम्मत! नेता वा महन्थवा सभ ओते कांच नहि अइ। अपन क्षमतानुसार सभ चमचा पोसने अइ। ई चमचा सभ महन्थक आदेश पबिते जे कुनू

बेताल कथा

काज करवा लेल तैयार रहैछ। एकरा दस टा हाथ-पैर छैक जे एकरा लोकनि सं दूंसि लेत!

—अच्छा, एगो बात पुछू।

—एगो कि एक, एक पथिया पुछू। एहि में एते सोचबाक को छैक? हम कि कुनू महन्थ थोड़वे छी?

—तामस त ने करब?

—सत करू को?

—मैना बिहुँसैत माथ डोलओलनि।

—एक सत्त, दोसर सत्त, अहाँक पुछला पर जे तामस करय से अस्सी कुण्ड नर्क में पड़य।

—भेल-भेल। अच्छा ई चमचा शब्द अहाँ के कतय भेटल? आकि अहींक गढल थिक?

—इएह लियह। एहो दुआरे ने कहैत छी जे खोगण जाति केँ भने सरकार राशनकार्डक सोस्टम बना बराबरिक दर्जा द दैक परंच खोगण रहत खोगणे। कहू भला! चमचा सन प्राचोन आ पौराणिक शब्द। हं, एमहर प्रचार में अनबाक श्रेय हमरा देल जा सकैछ।

—प्राचोन आ पौराणिक—एकर अर्थ नहि बुझौं? आ आर एगो बात, बेर-बेर खोगण-खोगण हमरा नहि नोक लौए से कहि दैत छी।

—बेस महारानो साहिब—साफ कएल जाय। आव नहि कहब। तोता बेस नाटकोय भंगिमा में जबाब देरथिन आ से देखि मैना अपन हंसो रोकि नहि सकओह। ठहाका बज भेला पर तोता आरंभ केउन।

—देखू, चमचा शब्दक बेर-बेर प्रयोग भेल-ए महर्षि व्यास द्वारा, जे अपन सतरह पुराण में एहि शब्द पर पूर्ण प्रकाश दैतहुं संतुष्ट नहि हेबाक कारणे 'चमचा पुराण' नामे अठारहन पुराणक रचना केउन। हुनक प्रसिद्ध श्लोक अछि—

बेताल कथा



अष्टादस पुराणेषु व्यासाज वचनम ध्रुवम् ।

सर्वकाले सभी क्षेत्रे चमचा सर्वत्र विद्यते ।

एहि पुराण में चमचाक वर्गीकरण सेहो कणल गेल अइ । व्यासजीक अनुसार चमचा चारि प्रकारक होइछ —

- १) ओ जकरा ज्ञानक छूति नहि रहै छइ, तें महन्थक बात कें ब्रह्मवाक्य मानि ओकर आदेशक पालन करैछ ।
- २) ओ जकरा थोड़-बहुत ज्ञान रहैत छैक आ तें बाहरक बसात लगाने ओकर मन बदलैत छइ, परंच महन्थ लग पहुँचि ते सटक सीताराम ।
- ३) ओ जे स्वार्थवस चमचागिरी करैए । एकर पुनि दू गोटा उप-भाग छइ —

क) ओ जकरा महन्थ कुनू पद पर बैसा दैत छैक आ ओकरे कान्ह पर बन्दूक राखि अपन दाव सुतारैए ।

ख) ओ जे वास्तव मे अपनो काज सुतारि लैछ — जेना कहियो नाटकक नपुंसक नायक बनि गेल त कहियो महन्थ संपादित कुनू पत्रिका मे दू चारि पांतीक फकड़ा — छपा लेलक । एवम क्रमे कालान्तर मे ओहो महन्थेसन होरो किंवा साहित्यकार बनिजाइए ।

४) ओ जे फंचारि टाइपक होइए । कहियोकाल सभा सोसाइटी मे बाजिलेत — महन्थक विरुद्ध हिजरा विद्रोह करत परंच फेर जहिना क तहिना ।

—तकर माने भेल जे चमचा अदोए सं होइत आयल-ए ? मैनाक प्रश्न छलनि ।

—ताइ मे कून संदेह । रामायण काल मे महाराज रामक दरबार चमचा सं भरल छल । हनुमानजी प्रधान चमचा छलाह । महाभारत काल मे पाण्डव पांचो भाइ किमुन गोसाइक चमचा छलाह । देवता लोकनिक

चमचा नारद विश्व विख्याते छथि । महाराज इन्द्रक चमचा मे खाली स्त्रीगणे छथि ।

—परंच वर्तमान समय मे एहि चमचाक संख्या त बेसी नहि हेबाक चाही ? आ तखन एकर शक्तिये की ?

अठनियां मुस्की दैत तोता कहलथिन—

संख्या पुछैत छी ? अनगिनत । मैथिली संस्था वा पत्रिका सं ल कें देशक शासक हों वा विरोधी दल, सब ठाम एकर भरमार छैक । देशी-विदेशी महन्थ द्वारा चालित ई एगो विशाल दर्ग अइ । रहल गप शक्तिक से मैथिलीक क्षेत्र मे ई चमचा सब हिजरा आन्दोलन करैए आ महन्थक गुणगान मे गीत-लेखादि लिखैए । मुनबै त कणल जे मैथिलीक सपूत लोकनि कें सरकारी गुन्डा लाठी सं कपार फोड़ि देलक परंच एगो खनाम-धन्य मैथिली सेवी संस्था तकर निन्दा-प्रस्तावो ने पास क सकल । देशक स्तर पर—कागज पर 'गरीबी हटाउ' आन्दोलन आ व्यवहार मे 'शान्ति रक्षार्थ' गोली चलाउ आन्दोलन करैए । भाषण मे जनतंत्रक ढोल पीटत परंच कार्यतः जनताक कंठ मोकैए.....

—बाप रे ! दू बाजि गेलै । घड़ी देखैत मैना चिचिप्ली ।

—की भेल !!

—दैत कि कप्पार ! दू बाजि गेलैक । 'शोक' टाइम ।

—धत्तरे के । हमरा त एकदमे ने मन छल । अहां जल्दी सं तैयार भ जाउ, हम ता रिक्सा देखै छी । एहि प्रकरण के आइ एहीठाम शेष कणल जाय दोसर दिन समय देखि आगा कहब । की विचार ?

—विचारे-विचार । एखन जल्दी करू । रिक्सा बजाउ ।

—'बैस' कहैत तोता उठलाह आ आजुक बैसार एहीठाम उसरि गेल ।



## विद्यापतिक बखी

लाल बुझकर जवन सभागार मे प्रवेश केलनि तखन कार्यक्रम आरंभ भ गेठ रहैक। सभागार लोक सं ठसाठस भरल। चुटो ससरक दर नहि। तें बेचारे एक कात मे दबकि कें ढाढ़ भ गेलाह। परंच महा-पंडित तर्क शिरोमणि गोनु भा क नजरि भरिसक हिनके बाट हेरैत छल। नङ्गे टिया संगी छलथिन आ तें एहि बेर भेंट हेबे करतनि ताही विश्वासक संग ओ महानगरक यात्रा कयने छलाह। नजरि परिते ओ इसारा सं मंचपर पहुँचबाक संकेत केलथिन। इच्छा त लाल बुझकर के सेहो छलनि परंच छलाह ओ स्थानीय लोक—माने बारीक पाटु आ तें लोक अन्यथा व्यवहार नहि क बैसेनि से सोचि ठामक ठामहि रहि गेलाह—मन मसोसि कें। ओमहर गोनु बाबू प्रधान अतिथिक आसन पर रहबाक कारणे उठि ने सकैत छलाह। दुनू एक दोसर कें देखैत टा रहलाह।

भाषणक कार्यक्रम शुद्धस्तर पर चलि रहल छलैक आ पते ने चलैत छलैक जे ई क्रम शेषो होयतैक। दर्शक हाफी करैत छल। केओ केओ मपकी मारैत छल, ता गोनु बाबूक नामक घोषणा भेलनि आ लोक सचेतन भेल।

गोनु बाबू नोसिदानो सं भरि चुटकी नोसि बहार कय नाकक दुनू पूरा कें जाम करैत उठलाह आ कात मे राखल, फूल-माला सं मांपल कविपति विद्यापति ५ फोटो कें नमस्कार निवेदित करैत बजलाह—बन्धुगण ! अहां लोकनि जनिते छी जे हमरा सातमो किलासक साटो पीकट नहि अइ आ

एहि मंचपर एक सं एक जरदगव विद्वान-बलवान धनवान उपस्थित छथि। ई लोकनि बहुत किछु कहि गेलाह—ए जे हमरा सुनलो-जानल ने छल। तथापि विधि निर्वाह त करै—ए पड़त। हमरा विचारें ई प्रश्ने अनर्गल थिक जे विद्यापति तीन गो देवी-देवता कें पूजैत छला वा पाँच गो कें। सभ केओ जनैत छी जे मिथिला मे पैघ लोक उएह कहबैत छल, आ एखनो कहबैत अछि, जे सभ कथू मे आगू हो। जेना बेशी विबाह होइक, बेसी धोया-पुता होइक, बेसी धन सम्पति होइक, बेसी टंट घंट करय, बेसी गप हांकय, बेसी खाय। कहबाक आशय मे तात्पर्यक मतलब ई जे सभ बिछु बेसी हेबाक चाही, कम नहि। आ पैघ हेबाक वा कहेबाक सेहन्ता ककरा ने होयत छैक। विद्यापति सेहो मनुखे छलाह आ तें हुनको ई सेहन्ता अबसे छल होयतनि। तें हमरा जनतवे ओ छप्पन कोटि देवी-देवताक पूजा करैत छल होयताह। ई त हुनक किबां हमरा लोकनिक—सौभाग्य जे कही जे समाजक ठेकेदार पैघ-छोटक बही लिखनिहार बनियां सभ हुनक नाम तथा कथित पैघ लोकक पांती मे नहि घुसिया देलकनि। आ एकर कारण हमरा जनैत एकैटा छैक जे ओ एकगो बियाह केने रहथि। ओना हम पहिनहि कहि चुकल छी जे हम कुनू अधिकारी विद्वान त छी नहि। भ सकैए काल्हि केओ शोध क कें प्रमाणित क देखि जे विद्यापति कें एक सै एकैस बियाह छलनि, जेना कि कएकटा नब बात आई सुनबा मे आयल—ए।

हमरा जनतवे ओ छलाह सुजा मैथिल। मैथिल सभ्यता-संस्कृतिक अनन्य उपासक। प्रमाण स्वरूप हुनक धोया पुताक नाम कें लेल जा सकैछ जे हरपति, नरपति, वाचस्पति आ दुल्लहि छलनि। आजुक फोर-फिगर पबेबला तथाकथित प्रबुद्ध मैथिल जकां ओ पाश्चात्य सत्यताक 'इमिग्रेशन' नहि छलाह ने त हुनको धोया पुताक नाम पथू, डब्यूक, चिप्पी, टिक्कू, पॉली, डॉली आदि रहितनि। हुनको धोया-



पुता माँ के मामी आ पितिआइन के आंठी कहितथिन। 'दुल्लहि कतय गेली तोर माय, कहहुन आवथु आव नहाय' क बदला ओ कहितथिन डाँली तेरो मामी कहाँ है, बोलो बाथरूम से हो आय।

त से जे कैत छलौं, ओ सुच्चा मैथिल छलाह आ तें माछ-माउस आ मधुरक प्रेमी छलाह आ तें छलाह रसोक। माछ-माउस नहि खेनि हार क रचना ओतेक रसगर भइए ने सकैछ। दोसर ओ कुनू होटल-बार एटेन्ड नहि करैत छलाह अपितु सुच्चा मैथिल जकां अपन जातीय पेय भाङ पीवैत छलाह आ सेहो अपने ओतय बनवा के। के नहि जनैछ जे भाङ बनेवा मे 'स्पेरालिस्ट' हेबाक कारणे ओ उगन खवास के ओतेक मानैत छलथिन आ ओकरा पर कहियो कनियो तामस नहि केलथिन। भाङक हेतु दूधक प्रयोजन होइते छैक। हुनक 'मिल्क सप्लायर' छलथिन कृष्णचन्द्र यादव जे इमानदार छलाह आ दूध मे मिसियोभरि पानि नहि मिलवैत छलाह। स्वभावतः विद्यापतिक बेसी रचना उगन खवास आ कृष्णचन्द्र यादवक चारुकात चक्रमाउर दैए। ओना एहि विषय पर हमर मीता लाल बुझ्झकर विशेष कहि सकैत छथि आ हम आशा करब जे ओ अपन कविता पाठ सं पहिने दू-चारि आखर अवस्से कहता। हम एतवे कहि शेष करैत छी। जय मैथिली

समागार मे थपड़ी गड़गड़ा उठठ आ वातावरण शान्त भेलाक बाद कविता पाठ आरंभ भेल। पहिने दू-चारि गो टुटपुजिया कविक कविता भेल आ तकर बाद 'एनाउन्स' भेल लाल बुझ्झकरक नाम। ओ अपन 'साइड बैग' झुलवैत मंच पर प्रहंचलाह आ माइक पर खवास करैत आरंभ केलनि।

भाइ सब! ओना हमरा कविता पाठक आदेश भेटल-ए परंच गोनु बाबूक आप्रह आ पूर्वक विद्वान वक्ता लोकनिक नव-नव खोज सं प्रभावित भ हम दू-चारि शब्द बाजि रहल छी, फेर कविता पढ़ब।

अपने लोकनि विद्वान अध्यक्षक मुहें सुनि चुकल छी जे आइ हमरा लोकनिक हेतु अपार हर्षक दिन थिक कारण अजुके दिन हमरा सबक सब स पैघ लेखक 'कविपति' विद्यापति 'सर्गवासी' भेल छलाह। ओना हम कहब जे ओ दिन हमरा लोकनिक लेल डबल अपार हर्षक होयत जाइदिन एके संग मिथिलाक समस्त 'कवि' 'सर्गवासी' भ जेताह। 'कवि' लोकनिक लेल सेहो 'सर्गवासी' भ गेनाइ लाभकर होयतनि, कारण तैखन हुनको लोकनिक चर्च हेतनि, बखीं मनाओल जेतनि, ओहो लोकनि सोधल जेताह।

आजुक मैथिल जाति भूत जीवी आ भूत प्रेमी थिक, ओकरा वर्तमान आ भविष्य सं कुनू समन्ध-सरोकार नहि छैक। दोसर बात जेना कि अध्यक्ष महोदय बजलाह-ए, ई अहां लोकनिक लेल 'सोहागक' बात थिक जे आजुक मंच पर तीन-तीन गोटा विद्यापति विशेषज्ञ उपस्थित छथि। ई तीनू विद्वान—डा० गोबर गणेश गोइत, जिनका हाले मे 'विद्यापतिक नायिकाक नुआ' पर शोध करै लेल पीएच०डी० क सम्मानोपाधि देल गेलनि-हैं, डा० माखुर झा, जिनका 'विद्यापतिक नायिकाक चूड़ी' पर शोध करैक उपलक्ष्य मे पीएच० डी० भेटलनिहैं तथा डा० खेसारी खवास, जिनका 'विद्यापतिक नायिकाक आंगी' पर शोध करैक उपलक्ष्य मे पीएच० डी० प्राप्त भेलनि हैं, अपन विद्वताक परिचय दए चुकल छथि। ओना हम कुनू अधिकारी विद्वान नहि छी कारण हमरो कुनू सिंग नाङ्गि, जेना नामक आगा प्रोफेसर-डाक्टर आ पाछा पीएच०डी० डि०लिट०, नहि अइ। तथापि हमरा बुझने हिनका लोकनिक शोध मे कमी रहि गेल छनि। जेना कि ध लेल जाओ, डा० गोइत नाना-रंगक नुआक चर्च केलनिहैं परंच ओ ई नहि कहलनि जे विद्यापतिक नायिका सदा नुआए पहिरैत छलथिन वा कहियो काल—जेना कुनू पाटी वा क्लब एटेंड करबाक समय मिनी-मैक्सी, बेल-बट सेहो? डा० झा जे चूड़ीक चर्च केलनिहैं ताइमे लहठीक चर्च नहि छल। संगहि ओ इहो स्पष्ट नहि केलनि जे



विद्यापतिक नायिका दुनू हाथ में चूड़ी पहिरैत छलथिन कि एक हाथ मे ।  
जं एक हाथ में पहिरैत छलथिन त बामा मे ने कि दहिना मे ।

हमरा मनमे ई सभ प्रश्न जगनाइ स्वाभाविक अइ आ हम आशा करैत छी जे अपनो लोकनिक मन मे एहन प्रश्न अवस्ते उठल होयत । तकर कारण जे ओ घड़ी त अवस्ते बन्दैत छल हेती—से भने बामा मे बा दाहिना हाथ मे बान्धथु आ तें घड़ीक शोभा निखारै लेल ओ हाथ चूड़ी मुक्त रहवाक चाहो । घड़ी जे ओ पहिरैत छलीह ताई मे कुनू संदेह नहि हेवाक चाहो कारण जखन कहियो होटल वा पार्क मे हुनका नायकक संग 'एपोआन्टमेंट' रहनि-ओ सदा-सर्वदा उचित समय पर पहुँचि जाथि । तहिना डा० खवास आंगीक विवरण दैत काल 'ब्रा' क चर्च नहि केलनिहें । हमरा जनैत विद्यापतिक नायिका ने त हिप्पीन छलथिन आने भरदुलाहि जे बिनु 'ब्रा' क रहितथि । तें जं डा० खवास आंगी सं मात्र ब्लाउजक अर्थ लेने होथि त 'ब्रा' पर फराक सं शोध हेवाक चाहो कारण 'ब्रा' क स्थान आंगी स पहिने छैक । तहिना 'साया' पर सेहो शोध हेवाक चाहो । हमरा जनैत उपरोक्त तोनू विद्वान के विद्यापति विशेषज्ञ नहि कहि जं विद्यापतिक नायिकाक क्रमशः नुआ, चूड़ी आ आंगी विशेषज्ञ—कहल जाय तं बेसो उपयुक्त होयत ।

असल मे बाबा विद्यापति पर बड़ बेसो शोध भेल—ए परंच तेथो ओ नोक जकां सोधायल नहि छथि । सत्त पूछो त विद्यापति भेलाह बैतरनी नदीक गाय—नाङ्कि पकड़ू आ पार भ जाउ । प्रयोजन छैक डाकडर बनवाक अभिलाषो लोकक । अखनो बहुत विषय बांकी छैक जेना कि ध लियह विद्यापतिक नायिकाक केश शृंगार । ओ खोपा बन्दै छलो ने कि जुष्टो गुह्रवै छली वा बान्ध कट रखैत छलीह ? आ तेहना हालत मे कून 'न्यूटो पारलर' मे जाइत छलीह ? तेल लैत छलीह वा सेम्पू करैत छलीह ? कून सेम्पू करैत छलीह ? क्लिनिक ने एग नेकि

लेमन । आर विषय सभ छैक—नेल पालिस काजर वा सुरमा, स्नो पाउडर, लिपस्टिक, टिकुली सटैत छलीह आ कि ड्रेसक संग मैच करैत शृंगार-ठोप करैत छलीह ? भौंह चौरा छलनि ने कि एन फ्रेंचक सहायता सं ओकरा पातर करैत छलीह ? विद्यापति लिखने छथि भौंह निरेखल आखि । परंपरानुसार पान खाइ छलीह ने आधुनिकसन सिगरेट पीबैत छलीह ? पान खाइत छलीह त मोठा ने जर्दा ? सिगरेटक कून ब्रान्ड छलनि ? जुत्ता कून कम्पनीक आ केहन पहिरैत छलीह ? बाटा ने कि फ्लेक्स ? हाइली ने कि साधारण । गोदना गोदओने छलीह कि नहि, कञ्जीपर नायकक नाम छलनि कि नहि ? विद्यापतिक नायिकाक गहनापर विशाल शोधग्रंथ तैयार भ सकैछ । जेना कि ओ पुरना सूति-पाति, कांडा-छाड़ा पहिरैत छलीह, :कान मे देठा वा मकड़ी छलनि आ ने वर्तमानक वाली वा कुडल ? गहना खांटी सोनक छलनि ने कि 'इमिटेशन', कारण अभिसार मे जाइते छलीह आ तें चोरि-बटमारिक भय स्वाभाविके ।

एवम् प्रकारे बहुतो विषय छैक जाइपर शोध हेवाक चाहो । हम आशा करै छी जे अपने लोकनि हमर विचार सं अवस्ते सहमत होएब । हम आर अधिक समय नहि ल एखने किछु घड़ी पहिने एही सभागार मे रचित कविता सुना रहल छी ।

लाल बुझकर बुझ गिया कि आर ने बुझा कोइ  
पैर मे उखड़ि बान्हि क हरिण चरक्का होइ  
हरिण चरक्का होइ लड़क्का बकरी-छागर-हिजरा  
बैकिंग पावि महाकवि बनइछ बना चारि-छो फकड़ा  
भदवरिया बेगो सन पोएच० डी० डि० लिट्क पथार  
तेलक दाम बढ़ल जाइत छइ बढ़ले जाइ बजार  
बढ़ले जाइ बजार हजार-हजारक 'क्यू' छइ  
ठोकथु माय कपार जर संतानक ऐहने 'मिउ' छइ  
लाल बुझकर बुझ गिया कि आर न बुझा कोइ  
मिथिला-मैथिल-मैथिलीक रक्षा दैवे शक होइ ।



## कुर्सी महात्म्य

बेचारे राजा विक्रमादित्यक सिगरेटक पैकेट प्रायः खाली भ गेल छलनि आ पैर सेहो भरिया गेल छलनि। ओ असोथकित भ कें गाछक जड़ि मे बैसि रहलाह। तैखन लिफ्टेरक शब्द कान मे पड़लनि त बेहरा प्रसन्न भ गेलनि। श्रीमान बेताल राज आवि गाछक दुकन्हा पर विराजमान भेलाह आ अपन दहिना हाथ मे बान्हल शीको घड़ी देखैत बजलाह—हमरा कने बिलम्ब भेल ने !

—कुनू बात ने। आवि गेलौं ने। हमरा त चिन्ता सं मथदुक्खी पकड़ि लेने छल। महाराज विक्रमादित्य शान्त स्वरें बजलाह। बेताल-राज कें हंसी लागि गेलनि। ओ हंसिते बजलाह—चिन्ता ! आ महाराज विक्रमादित्य कें ? हाउ फन्नी !

—अपने की बुझबै श्रीमान बेतालराज। देश आ देशवासीक चिन्ता सं हमरा भरि-भरि राति नीन्न नहि होइए।

बेतालराज अचरज प्रकट करैत बजलाह—नव गप कहल महाराज। अरे देश आ देशवासीक दुखक कथा त राजा-महाराजा क मुहें तक सीमित रहैत छैक, हृदय मे थोड़बे ?

—अहाँ उनटा अर्थ लेल मीता। हमर कहवाक तात्पर्य छल जे लोक हमर निन्दा-आलोचना करैछ, अपदस्थ करवाक नेयार-भास करै-ए।

—ओ ! आव बुझ ने। आखिर तकर कारण ?

—कारण ? हे .....ओ दक्षिणवारी कात जंगल देखैत छी ने, ओइ

मे एगो टिलहा छइ। से हे मित्रवर, जखन कहियो चरबाह सभक बीच भगड़ा होइत छइ त एगो दुसाधक ननकिड़बा ओइ पर बैसि—जेना कुन राजा राजसिंहासन पर बैसल हो—भगड़ाक तसफिया करैए। आ से एतेक नोक जे बुझि लियह दूधक दूध आ पानिक पानि। आव त सुनै छी जे कात करोटक गाम सं सेहो लोक सभ आपसी भगड़ाक तसफिया करेबा लेल ओतै पहुँचैए। एमहर हमर विसाल न्यायालय भन्दा पड़ि रहल ए। ओइ बीत भरिक छौंड़ाक गुणगान चाफकात भ रहल छैक।

बेताल राज गंभीर होइत बजलाह—बेस सरिपहुं सिरियस बूझना जाइछ। ओ अपन चुरट लेसलनि आ किछु सोचि आगा बढ़लाह—परंच हमरा अछैत तोरा चिन्ता करवाक प्रयोजन नहि। हम एखन तकर कारण निराकरण कहि रहल छी, ध्यान सं सुनह।

महाराज विक्रमादित्य कने आश्वस्त भेलाह आ जेबी सं 'केली-क्लोथ' क बड़का रुमाल बहार क कपारक घाम पोछलनि आ फेर ५५५ बहार क एगो सिगरेट चाइनीज लाइटर सं लेसलनि।

बेतालराज कथा आरंभ केलनि—हे राजन ! अहाँ के ज्ञाते होएत जे डा० नास, एम०ए० (त्रय), पीएच० डी०, डी०लिट० कुल अठारह गोटा पुराणक रचना केने छथि। एहि मे अन्तिम सं पहिलुक परंच सबसं प्रमुख पुराण थिक 'कुर्सी-पुराण'। आने पुराण सभ जकां एहू मे कतेको अध्याय छैक आ विभिन्न अध्याय मे विभिन्न विभागीय प्रधानक कुर्सीक कथा-गाथा बड़ सहज आ सुन्नर ढंग सं वर्णित छैक। उदाहरण स्वरूप-विरोधी दलक नेताक कुर्सी, श्रमिक संघक नेताक कुर्सी, सम्पादकक कुर्सी, उपाचार्यक कुर्सी, फिल्म निर्देशकक कुर्सी अछि। एहि पुराणक अन्तिम अध्याय जे सभ सं महत्वपूर्ण अइ ताइ मे जाइ कुर्सीक कथा छैक से कुर्सी मे आन सभ कुर्सीक शक्ति आ गुण सन्निहित छैक। एहि कुर्सी पर जे बैसत से राता-राती विश्वक महान नेता, अभिनेता, युगचेता, बुद्धिमान, विद्वान, धनवान, बलवान, लेखक, चिन्तक, आइनझ, मानवदर्दी, शान्तिव्रत, धर्मात्मा,



महात्मा बनि जायत, भलहि ओ एहि सं पूर्व लुच्चा लफंगा-चोर-बदमास आ निरक्षर भट्टाचार्य किएक ने रहल हो। अथवा मनुक्खक बदला गदहे किएक ने ओइ पर बैसि जाय। ओकर मुखारबिन्द सं निस्सरित एक-एक बात लोक के सुनवाक्य सन नीक लगतैक आ सभ आखि मूनि क ओकर पालन करत।

एतवा सुनिते महाराज विक्रमादित्यक मुंह सं एक लोइया लेर चुवि गेलनि जे बेताल लक्ष्य केलथिन आ कथा के आगू बढ़ाओलनि—से हे राजन ! एही कुर्सी पर कहियो राम बैसल छलाह, कृष्ण बैसल छलाह। ई वास्तव मे ओइ कुर्सीक महत्व छैक जे साधारण लोक होइतहुं राम आ कृष्ण देवता बनि गेलाह आ सब ठाम पूजित होमय लगलाह। आ सरह कुर्सी ओइ टिलहातर छैक।

बेतालराज शेषो ने केने छलाह कि महाराज विक्रमादित्य फुफुरा के उठलाह। बेताल रोकैत कहलथिन—अगुतेने काज नहि होइ छैक 'योर हाइ-नेस'। आखिर ओकरा प्राप्त करवाक सूत्र त जानि लेल जाओ। अन्यथा अपने जंगल कोरलाक पश्चातो ओकर नाम-निसान नहि देखि सकैत छी।

महाराज लुद द बैसि गेलाह आ पुछलथिन—तखन कोना भेटतै से कने जल्दी कह ने।

सुनल जाय। ओइ कुर्सी के एक मात्र साधारण जनताए प्राप्त क सकैछ जे मन सं भवच्छ, तन सं परिश्रमी हो आ देशभक्त हो।

परंच से सभ त हमरा विरोध मे अइ। न्यप्रताक संग विक्रमादित्य वजलाह।

जनैत छी। तोरा लग किछु चमचा त छह ने। ओकरा सभ के देशक विभिन्न स्तरक जनताक भेष मे सजा के पठावह। ओ लोकनि तोहर नाम कीर्तन करैत जायत आ कुर्सी के कोरि क आनत आ फेर उएह सभ ताइ पर तोरा प्रतिष्ठापित करत। आर सुनह। ओइ कुर्सी पर बैसलाक बाद तोरा किछु नियम-कानून पालन करय पड़तह। जेना सत्य नहि बाजो

दिवारात्रि देव आ देशवासीक चंच करी आ घरियाल जकां नोर बहाबी परंच कार्यतः स्वजन पोषण करी, मात्र भाषणकाल देश-भाषाक व्यवहार करी, परिधान विश्वक संग सामंजस्य रखैत हो, विरोधक गन्ध पबिते ओकरा समूल नष्ट करी, किछु दरबारी चमचा के छोड़ि समस्त देशवासी के सतत कष्ट मे राखी, प्रयोजनी वस्तु-जातक दाम आकाश ठुबैत रहय आ कखनो-कखनो बजार सं आलोपित भ जाय बेकारी दिनानुदिन बढ़ैत रहय आ सेनाक संख्या मे सभदिन बढ़ोत्तरी हेवाक चाहो, सतत देश पर बहरिया आक्रमणक बात प्रचारित करैत रही, देशक विभिन्न जाति आ धर्मक बीच भगड़ा बमोबाक प्रयास हो। आ एहि सभ काजक लेल प्रचुर मात्रा मे चमचा प्रोडक्सन हो। आर कतेरास बात छैक जे तोरा ओ कुर्सी स्वयं सिखा देतह। आ एहि तरहें तौ विश्वक महान लोक बनि जेबह, मरि के अमर बनि जेबह।

अच्छा मीता ! एहन कुनू उपाय त कहह जाइ सं हमरा बाद ओ कुर्सी नष्ट भ जाय आ फेर ओइ पर केओ बैसि नहि सकय।

आइ यम सँ डी डीयर, रियली वेरी सँ डी। सरिपहुं एहन कुनू द्वारा नहि छैक। असल मे ई कुर्सी थिक अभिशापित। तोरा बैसलाक कारणे ई विक्रमादित्यक हिंसासनक नामे जानल जायत। तोरा मरिते ई अलोपित भ जायत आ फेर बीसम शताब्दीक उत्तरार्ध मे जम्बूद्वीपक भारत खंडक हस्तिनापुर मे, जेकि तखन दिल्लीक नाम सं विख्यात रहत, प्रकट होएत, तखन प्रजातंत्रक प्राधान्य रहतैक आ तें ई प्रधान मंत्रीक कुर्सीक नामे ख्यात होएत।

एतवा कहि बेतालराज अपन हेलिकेप्टर मे बैसि आकाश मार्ग सं विदा भ गेलाह। महाराज विक्रमादित्य बेल-बॉट क पछिला जेबी सं ककबा बहार कय केश फेरलनि आ एगो सिगरेट लेसि चौयनिया मुक्कीक संग घरमुंहा विदा भेलाह।



## बिप्लव

श्रीमान बैताल राजक पैर थकका गेलनि । पार्क-लेकादि मे छौंड़ा छौंड़ीक लीला ओ देखि चुकल छलाह, परंच एतौ से आरम्भ भ जायत तक कल्पनो ने केने छलाह । बम्बे डाईंगक प्रिंटक हाइ-कलर कुर्ता आ प्रिंट लुंगील परिधान आ बन्दकट केश राशि बिनु तेलक हवा मे उड़िआइत, ठेहुन पर माथ मुकेने जेना कोनो अभिसारिका अपन प्रेमोक प्रतीक्षा मे बैसल हो । हुनका अपना आंखि पर सन्देह भेलनि त जेबो स अपन जीहो पावरक चश्मा बहार क पहिर नीक जका देखलनि ।

—हलो मिस्टर बैताल !

—अरे ! विक्रमादित्य तौ ? कह की हाल-चाल ?

—भाइ बड़ पैघ समस्या आवि गेलए ।

—समस्या !

—हं, सम विरोधो-ए भ गेलए । समस्त जनता हमरा विरोध मे संगठन केलकए । ओ सम हमरा विरोध मे समा करै-ए, नारा लगवैए आ हमरा सत्ताच्युत कर चाहैए । हम त आव नीक जका घुमियो-फोरि ने सकै छी ।

—ओ ! समस्या त ठीके पैघ छैक किन्तु घबरेबाक प्रयोजन नबि । हम त छीहे ।

—मिस्टर बैताल अपन पाइप धड़ौलनि आ दुकन्हा पर जा क बैसि गेलाह । विक्रमादित्य सेहो जेबो स बोटल निकालि एक घोंट देलथिन आ पुनः सिगरेट लेसलनि ।

—मिस्टर विक्रमादित्य ! आव त तौ बोटल-सेबन सेहो करै छ तखन ई साधारण समस्या स घबड़ायब ।

—आखिर बात की छइ से नबि चुकल मोता । डाक्टरक परामर्श स स्वास्थ्य रखार्थ एकर शरणागत भेल छी हम ।

—खैर बात जे होऊक । ध्यान स सुनह । आइ हम तोरा ओही डाक्टर व्यास विरचित 'वृहदारण्य पुराण' क एगो लघुकथा सुना रहल छियह—

—खिस्ता !

—हं, हमरा आशा अइ जे तोहर समस्याक समाधान ओकरा द्वारा भ जेतह । पढ़िने आव एगो समाचार द दियह—मिस्टर व्यास के सहित्य-शिरोमणिक उपाधि हाले मे भेटलनि हैं ।

—ओ कि जिविते छथि ?

—भारतीय दर्शनक अनुसार आत्मा अमर होइछै ने । खैर आव कथा सुनह । एकर शीर्षक थिक 'बिप्लव' ।

—सी० बी० आइ० प्रधान कौआ कुमार कानगोइ जंगलाधिपति श्रीमान १०८ शेर सिंह के समाद देलकनि जे समस्त बनैया जानवर मिलि क एगो संघक स्थापना केलकए आ सब दिन कोनो ने कोनो मिटिंग करैए । जनता के सरकारक विरोध मे भड़काओल जाइए । सरकारक सभ दोखक भंडा-फोड़ क चुकलए । शेर सिंह के तकर बाद उकासी बन्न । सात दिन तक अपन गुफा गहबर स बहारो नबि भेलाह । कौआ दिनानुदिनक समाद कहि जाथिन । मुदा भूख स छटपटाय लगलाह त एक दिन अपन प्राइवेट सेक्रेटरी चमचा प्रधान श्रीमान शृगाल शर्मा आ कौआक संग विचार-विमर्श केलनि । दोसर दिन प्राते एगो बकरी के 'किडनैण्ड' क लेल गेल । सांफ होइत-होइत ई खबरि समस्त जंगल मे दावानल जकां पसरि गेल । दोसर दिन समाचार पत्र सभ मे सेहो छपल आ सांफखन विराट प्रोसेशन बहार भेल राजभवन दिस । जखन राजभवन लग पहुंचल त शेर सिंहक अब-स्था शोचनीय । काटू त खून नबि । ओ अपन प्राइवेट सेक्रेटरी आ कौआ स विचार केलनि आ तदनुसार श्रीमान शृगाल शर्मा उपस्थित भेला प्रोसे-शनकारीक समक्ष आ कनि-ए कालक बाद मुक्तिआइत शेर सिंहक लग हाजिर भेलाह । तुरन्ते 'किडनैण्ड' कएल बकरी के आनल गेल आ शेर सिंह



ओकरा गरदन पर प्रहार केलनि। टटका रक्त-मांस स उदर भरि चैन त राति भरि सुतलाह। तकर बाद स रोजाना एक दू गोटा बकरी, हरिणक हरण होइत रहल आ विरोधी सभ 'प्रोसेशन' बहार करैत रहल। कहियो शृगाल आ कहियो शेर सिंह स्वयं ओकरा सभक समक्ष उपस्थित भ भाषण द स्मार-पत्र ग्रहण करैत रहलाह। कहियो काल कोनो चमचा के प्रधान बना कोनो कमोशन बैसा देल गेल-हरण वा मरण केसके जांच करवाक निमित्त। सी० बी० आइ० क कार्य व्यस्तता बढ़ि गेल। शेर सिंह चैनक बंसुरी टेरैत रहलाह। ई क्रम चलैत रहल।

बाह मोता बाह। कमाल के कथा कहलह। हमरा त ओइ डाक्टर ब्यास के लेखनो चुमि लेवाक इच्छा होइए—विक्रमादित्य पोन भाड़ैत बजलाह।

सत्ते पैघ डिगरी ओहिना नबि भेटै छैक योर आनर।

हमरा बिचार अइ जे हुनका एक दिन बजा प्रोतिभोज देल जाय। एखन हमरा स्टाक मे भेट ई६ आ ओलड स्मगलर पर्याप्त अइ।

परंच दुखक बात ई छैक जे ओ देवलोक मे छथि आ देवगण हुनका छोड़ि नबि सकैत छथिन।

तखन ?

तखन किछु नबि। तोरा अपने राज मे ब्यासक खोज करवाक छह आ ओकरा दरबार मे सम्मानक संग नोक तनखा पर नियुक्ति करवाक छह। पद राष्ट्रकविक बना सकैत छह।

राइट यू आर मोता ! जानथि बाबा बैद्यनाथ जे भूठ कहैत होइथह। हमरा पूर्ण विश्वास अइ जे ई बुद्धि 'इण्डियन ब्रोन' मे नबि अबि सकैए। तोरा 'इम्पोर्टेड ब्रोन' प्राप्त छह।

खैर, देखियो स चिन्हलह त। अच्छा हम एखन चलो। कंकटा काज अइ।

वेश।

आ कर्मदर्शन केलाक बाद बेताल एक दिस आ डार लचकवैत विक्रमादित्य दोसर दिस बिदा भ गेलाह।

## ब्रह्माक श्राप

आ बेताल राज कथा आरंभ केलनि—कथाक नाम भेल 'ब्रह्माक श्राप'।

एक खेप एहन भेल जे देवराज इन्द्रक अत्याचार-अनाचार सं तंग आवि प्रधान प्रधान देव-ऋषिगण हुनका विरुद्ध गुरु बृहस्पतिक अदालत मे मामला डारि केलनि। दिनका लोकनिक ओकिल रहथिन ब्रह्मर्षि विश्वामित्र। ओ अपन मोक्किल दिस सं अभियोगक तालिका प्रस्तुत केलनि जे एना छल - रौंदो दाही सं त्राण पेबाक लेल आइतक सरकार द्वारा कुनू काज नहि कएल गेल। ए फलतः प्रतिवर्ष कतौ रौंदो त कतौ दाही होइते रहैछ आ अन्नक अभाव मे सभठाम हाहाकार मचल अइ। सभ बख कागजपर योजना बनैए परंच कार्यतः किछु भ नहि रहल - ए। दानव लोक सं कर्ज मे गहुम ल क खाइत खाइत लोकक मानसिक स्थिति बिगड़ि रहलै - ए आ लोक सभ विपथगामी भ रहल - ए। धर्माचारक समस्त बाट बन्न भ जेबाक कारणे लोक पापाचार लीन भेल जा रहल - ए। स्वयं देवराज इन्द्र नारी आ मदिराक पांछा मत्त रहैत छथि। सैनिक जकर काज देवलोक के दानवी आक्रमण सं रक्षा केनाइ थिक - से देवलोकक नागरिक पर अत्याचार करै - ए आ तकर मात्रा दिनानुदिन बढ़ले जा रहल छैक। देवराज इन्द्र अपन बेटाक नामे विराट कारखानाक निर्माण केलनिहें संगहि बेटा-पुतोहुक नामे पाताल-लोकक बैंक मे कोटियो टाका जमा क चुकल छथि। एकर अतिरिक्त अन्यान्य व्यक्तिगत स्वाथपुतिक निमित्त सतत राजशक्तिक उपयोग कएल जा रहल - ए।

बेताल कथा

२५



एतवा कहि महर्षि विश्वामित्र वैसि जाइत छथि आ तँखन उठैत छथि देवराजक ओकिल विश्वकर्मा । ओ आरंभ करैत छथि—योर आनर, विरोधीदलक ओकिल जे सभ आरोप हमर क्लाइन्ट पर लगओलनिहें से सभ निगाधार थिक आ तकर कारण मात्र व्यक्तिगत द्वेष थिक । योर आनर नोट कएल जाय जे देवराज इन्द्रक यश चतुर्दिक पसरि गेल-ए आ तीनू लोक मे हुनम यशोगान भ रहल-ए, हुनक बुद्धिमत्ता आ कार्यक्षमताक प्रशंसा भ रहल-ए, तँ विरोधी लोकनि के डाह होइत छनि । देवराजक कार्यकाल मे देश कतेक प्रगति केलक-ए तथा एकर प्रतोष्ठा कतेक बढ़लै-ए, हम तकर किछु उदाहरण राखि रहल छी । योर आनर देवलोकक कतेको रास्ता-पेड़ाक नाम देव-श्रृषिक नाम पर राखल गेल-ए । राजधानीअमरावती केँ सरिपहुँ स्वर्ग बनाओल गेलए जतय बारहो मास छतीसो दिन वसन्त विराजमान रहैछ आ जकर शोभा देखिते घनैछ । दिनानुदिन बढ़ैत जनसंख्या केँ रोकबाक लेल जन्म-निरोधक आइन बनाओल गेल-ए । सभ केँ समान सुख-सुविधा उपलब्ध होइक तेँ आइन बना समर्पिक अधिकार मे कटौती कएल गेल-ए । आधुनिकतम बज्जक आविष्कार कएल गेल-ए जाइ सँ अपर लोक मे हमर प्रतिष्ठा बढ़ल-ए । संगहि विदेश नीति मे लाभजनक परिवर्तन भेल-ए । तेँ विरोधी दलक आरोप जे देवराज इन्द्र देश आ देशवासी लेल किछु नहि केलनिहें—एकदम स निराधार अछि ।

एहि तरहे कतेको दिन तक केस चलैत रहल आ पक्ष-विपक्ष मे दलोल देल जाइत रहलैक । अन्त मे प्रधान न्यायाधीश देवगुरु बृहस्पति आन-आन अभियोग केँ अनठा-मात्र राजशक्तिक अनुचित उपयोगक अपराध मे इन्द्र केँ दोषी ठहरओलनि । ओना एहि फैसला सँ इन्द्र पर कुनू प्रभाव नहि पड़लनि आ ओ पूर्ववत् अपन पद पर आसीन रहलाह जखन कि देवलोकक आचार संहिताक अनुसार दोषी ठहरबाक कारणे हुनका इस्तीफा द देब आवश्यक छलनि । हुनक दिनचर्या सेहो पढ़िने सन रहल । अन्त में विपक्षी लोकनि आन्दोलनक धमकी देलथिन । देवराज आन कुनू पथ

नहि देखि सभ केँ जहल मे ठूसि देलनि आ सम्पूर्ण मंत्रीमंडलक क्षमता अपना हाथ मे ल लेलनि । आकाशवाणीक संगहि समस्त प्रचार यंत्र सँ दिवा-रात्रि हुनके जयगान-यशोगान होमय लागल । ठीक एन मथोका पर वृद्ध ब्रह्मा फारेन टूर सँ फिरलाह त अमरावतीक एयरपोर्ट पर नारद केँ छोड़ि ककरो नहि देखि अचरज भेलनि । बाट मे जखन नारद द्वारा सभ बात ज्ञात भेलनि त ओ नारद केँ कारागार पठा अपने ओही टैक्सी सँ संभे इन्द्रालय पहुँचलाह । सांझ पड़ि गेल रहैक । इन्द्रक दरबार मे महफिल जमल छलैक । स्वयं देवराज दहिना हाथ मे मदिराक गिलास आ बाया हाथे एक श्वेतांगीक डार पकड़ने, मुँह मे पाइप, डान्स करैत । ब्रह्मा केँ त देखिते तरबाक लहरि टिकासन पर चढ़ि गेलनि । ओ बम-कलाह—इन्द्र !

—हेलो डीयर ओल्ड सूष्टा ! गुड इवनिंग । गुड, बेरी गुड इवनिंग टु यू ।

इन्द्रक मुँह मेलेच्छ भाषाक प्रयोग ब्रह्माक कान मे टहकैत तेल जकाँ बुभेलनि । ओ फेर गरजलाह—ई की भ रहलए ?

नथिंग गुनदेव । असल मे अपने बुढ़ भेलहुँ ने तेँ मन नहि होएत । आइ हमर 'बर्थ-डे' थिक ने—तकरे पार्टी । ई लोकनि हमर गेट छथि । दे आर आल फास्तर्स । अपने केँ परिचय करा दी । परंच—जेना इन्द्र केँ किछु मन पड़लनि ओ दोसर दिस घुरि आवाज देलथिन—वेटर ! एक बड़का ओल्ड स्मगलर आ एगो चिकेन टिक्का कबाब फॉर आवर ओल्ड सूष्टा । जल्दी । आ हँ—एक पैकेट स्टेट एक्सप्रेस ५५५ । बेचारे ब्रह्मा त तामसे माहुर भ रहल छलाह परंच तैयो शान्त स्वरे बजलाह देखैत छी जे सोमरस तोरा पर अपन बेस प्रभाव जमा चुकलए ।

हाट ! ड्रिंक्स हाउ फ्रजी ! अपने भरिसक बिसरि गेल छी जे ई राजा-महाराजाक खानदानो पेय थिक आ ताहू पर हम त जन्मक पूर्वहि सँ एकर अभ्यस्त छी । हमर स्वर्गीय पितृदेव सेहो नोक पीबाक छलाह । हमर बाबा ।



—तों अपन बकावास बन्न करह । हमरा सभ पता अइ । देवगण आ ऋषिगण कहाँ छथि ?

—हाउ कैत आइ से ? ई बजैत आ तलमलाइत ओ ब्रह्माक लग पहुँचलाह आ चुरठक एक पैघ कश खीचि एक लोइया धुँआ ब्रह्माक मुँह पर निक्षेप केलनि । बुढ़ ब्रह्मा दुनू हाथें ओकरा हटवैत पाछू हटलाह आ ताही क्षण नारद जो महाराज समस्त देवऋषिक संग हाजिर भेलाह । हिनका लोकनि के देखिते देवराज इन्द्रक सभ नशा छ मन्तर भ गेलनि । ओ कल जोड़ि मिनतीक स्वर मे बजलाह—सर ! हमर कुनू दोष नहि । विश्वास करू हिनका लोकनि के बुढ़ हेबाक संगहि बुद्धि सेहो भासि गेल छनि । तें त हम कहैत छियनि जे हमरे जकां मओज-मस्ती करू जे सभ दिन जवाने रहब । परंच ई लोकनि उनटे हमरा गारि पढ़ैत छथि आ हमर स्वर्गीय पिताक नामे यत्र-तत्र कुप्रचार करैत छथि । सर ! अपने त सभ जनैत छी जे हम अपन जन्मक पूर्व हें सं एहि देश आ देशवासीक सेवा करैत आयल छी । तेनहि मे अपन पिताक संग विभिन्न लोकक भूमण केने छी । हमर स्वर्गीय पिता सेहो एहि देशक हेतु की-की ने केने छथि । हमर देवतुल्य बाबा ।

ब्रह्मा फेर इन्द्र के चपटलनि त ओ थरथर कापय लगलाह । एमहर देव ऋषि-गण असहाय भेल तमसायल ब्रह्मा के देखि रहल छलाह । ब्रह्मा बेस शान्त स्वरे हुनका लोकनि दिस देखि बजलाह—देव ऋषिगण ! अहां लोकनि हाथ रहितो कहियो तकर उपयोग नहि कएल, पौरुष नहि देखाओल । तें आइ सं नपुंसक भ जाउ । अहां लोकनि सभ दिन एहिना विरोध मे चिचिआइत रहब, जहल जाइत रहब । जे हेतु स्वार्थ जनमि गेलए तें लोक के व्यर्थ ठकवा प्रयास करैत रहब परंच स्वार्थक पूर्ति कहियो नहि भ पाओत । आ ओ अपन कमंडल सं एक चुरूक पानि ल के हुनका लोकनि पर निक्षेप केलनि ब्रह्मा, वेलडन वेलडन कहि इन्द्र खुशी सं नाचय लगल परंच ब्रह्मा के अपना दिस फिरैत देखि कंपनी भ लेलकनि जेना माघक बदरी मे प्रातःभनान केलाक बाद होइत छैक ओ करजोरि के अनुनय स्वर मे बजलाह—सृष्टा, फॉरगिव मी । अहीन सत्पत हम निर्दोष

छी । तथापि कान पकड़ै छी जे एहन भूल कहियो ने करब । नेवर इन माइ लाइफ आइ प्रोमिस । ई बजैत ओ कान पकड़ि उठ-वैस करय लगलाह । ब्रह्माक गंभीर गर्जन भेल—इन्द्र !

—श्रीमान माह-माप

—तोरा मे साहस छौक ते तों सभ दिन शासन करैत रहबे । ओना अगिला पोढ़ी तोरा बलजोरी कान पकड़ि सिंहासन सं हेट क देत आ केश काटि, मुँह मे कारी चूनक टीका लगा, चानि पर खापरि राखि, गर्दभासीन क केँ अमरावतीक प्रधान प्रधान पथ पर प्रक्रिमा कराओत । समस्त देवलोक अपर लोकक निवासी तोरा दूर छोया करत । अन्त मे तोहर सन्तानो तोहर अपमान करत, गारि गंजन देत । बाध्य भ ओकरे सं समझ-ओता करबे आ ओकरे इशारा पर चलबे । एतवा सुनिते देवराज ब्राह्मि-ब्राह्मि क केँ ब्रह्माक चरण पर खसि पड़लाह । आंखि स दहोवहो नोर बहय लगलनि । ब्रह्माक हृदय द्रवित भ गेलनि । ओ अपन आप मे एमेन्डमेन्ट केलनि । देख, ओनाहमर आप त व्यर्थ जा नहि सकैछ । तखन एहि लोक मेनेहि, बीसम शताब्दी मे तों मनुखक जोनि मे जन्म लेबे । देवराज हेबाक कारणे तोहर जन्म पवित्र भूमि आर्यावर्त मे होएत । तखन स्लेच्छ भाषाक नीक जकां प्रचार प्रसार रहतैक आ स्वभावतः ओ तोहर खानदानी भाषा रहतौक । नारी मे अतिशय आशक्ति रहबाक कारणे तों नारी रूप मे जन्म लेबे । ई कहि ओ भरि चुरूक पानि इन्द्र पर निक्षेप केलनि । आकाशवाणी सं साधु साधु ध्वनित भेल आ सुमन वृष्टि होमय लागल । ब्रह्मा प्रस्थान केलनि आ इन्द्र माथ पर हाथ घेने बैसि रहलाह ।

—महाराजा विक्रमादित्य थपरीक संग वाह वाह करय लगलाह । —सरिपहुँ अनमोल कथा सुनओलह मोता । परंच एकर रचयिताक नाम त नहि कहलह ?

—रचयिता तोहर परिचिते डा० व्यास छथि । हुनका छोड़ि दोसर के एहन सुन्वा साहित्यक सिरजन क सकैछ ?

एतवा कहैत बेतालराज अपन गर्दभ विमान सं विदा भेलाह आ महाराज विक्रमादित्य अपन प्रियर पदिमनी गाड़ी स्टार्ट करय लगलाह ।



## उत्तर महाभारत

बेतालराज दुकन्हापर बैसल-बैसल बोर भ रहल छलाह आ महाराज विक्रमादित्यक पता ने। ओना ई त हुनक अभ्यासे छलनि जे विलम्ब सं अओताह आ दिस-दैट, हेन-तेन कारण कहि वेताह। बेचारे बेताल के चुरुटक अमल लागल छलनि। दियासलाई सठल छलनि आ सगरो खोजलाक पश्चातो नहि भेटल छलनि। असल मे एना हठान् बजार सं सलाई निपत्ता भ गेनाइ सभ के अचरज मे द देने छलैक। सभ सभ तरहक अनुमान लगा रहल छल। केओ सोचैत छल जे फेर भरिसक दाम बढ़तैक कारण बजट सेशन चालू छैक त केओ सोचैत छल जे हो न हो फारेन करेन्सीक लोभ मे एकरो एक्सपोर्ट भ रहल होएतैक। एमहर बेताल सोचैत छलाह जे करन महाराजक पद्मार्पण होएत। हुनका संग मे चाइनीज लाइटर हेबे करतनि आ ई अपन चुरुटक अमल शान्त करताह।

बेतालराज सामने तकलनि त देखैत छथि जे दुनू हाथ मे दू गोटा बोटल पकड़ने मुँह मे मिमायल बीड़ी तलमलइत महाराज विक्रमादित्य पधारि रहल छथि। ओ निचा उतरैत स्वागत केलथिन आ नव वर्ष शुभकामना जन गेलथिन—नव वर्षक अहांक लेल नव हो।

महाराज विक्रमादित्य बेताल दिस तकैत बजलाह जं नीक मन सं कहने छ त कुनू बात ने। जं बेजाय मन स कहने होइ त ई तोरा लेल नव हो तोरा जिनगी मे आवय बला सभ वर्ष नवे हो।

बेताल सोचलनि जे महाराज मूढ़ मे छथि। ओ हुनका गछक जड़ि

मे बैसा देलथिन आ लाइटर जेबो सं बहार क क दुकन्हापर चढ़ि गेलाह। चुरुठ लेसैत आ एक दम खीचैत पुछलथिन—मोता! जीड़ी आबर कि शोष नहि भेलैक ए?

महाराज बोतले मुँह मे लगा गट-गट के थोड़े पेटस्थ केलनि आ एक दम बीड़ीक सोंटैत आ खखास करैत बजलाह—बेताल सरिपहुं तो भरि जिनगी बेताले रहि गेलह। कुनू ताल मेल नहि। राति तों हमरा लोक-निक संग नहि देलह तकर काफी कचोट अहि हमरा मन मे। ओना आइ नव वर्षक पहिला दिन छैक ते' हम भागड़ा नहि करब। तो जनैत छह जे हम फ्रँक आदमो छो। रहल गप्प बोतलक। से जखन नव शिशुक जन्मोत्सव सात दिन धरि चलैत छैक तखन एतौटा वर्षक जन्मोत्सव कि मासोदिन धरि नहि चलि सकै-ए?

—कम स कम नओ मासधरि चलबाक चाही। आ तखन बांकी बचत तीन मास। आ कहबी छैक जे छओ मास ऋतु आगे धाबय। तं फेर आबै बला वर्षक उपलक्ष्य मे तीन मास पहिने सं उत्सव। आ एहि तरहेँ महाराजक हाथ मे बखौंदिन बोटल शोभयमान होयत रहत। परंच ई बीड़ी कहिया सं आ कून उपलक्ष्य मे?

देखह मीता। ओना लोक मानोओ बा नहि परंच मन सं हम छी सुबा सर्वहारा। दोसर आइ-कालि सिगरेटक पाकिट पर लिखल रहैत छैक जे सिगरेट पिनाइ स्वास्थ्यक लेल हानिकारक थिक। बेर-बेर ओइ पर नजर पड़ने साइकलोजिकल इफेक्ट भ सकैछ तं ब्रान्ड परिवर्तन। आर एगो बात छैक मीता, जानथि बाबा वैद्यनाथ जे फूसि कहैत होइ—जे मजा एहि तोनरंगा सूता बीड़ी मे छैक से सिगरेट मे कतय पाबी। देखहक ने कने पाबि क। महाराज एगो बीड़ी बेताल दिस बड़ा देलथिन।

माफ करिह' मीता। हमरा त नोक वा बेजाय—एके ब्रान्ड चाही। एकहि धर्म, एक व्रत।

तोहर मर्जी। हं, आइ एगो नोक खिस्सा सुनावह ने। माने धार्मिक कथा। महाभारतक भेने आर नोक।



बेताल राज के हंसो लागि गेलनि। ओ बिहुँसैत बजलाह—बृद्धा  
वेश्या तपस्विनी। बेतालक मुँह सं एहन गप सुनिते महाराजक आँखि  
लाल भ गेलनि। ओ गंभीर स्वरे बजलाह—माने !

माने: आब बयसो त भेलह। आ तपस्या त लोक बुढ़ादीए मे ने  
करैए। ओना हमरा आइ मूड नहि छोक कथा-पिहानीक।

अरे मूड त मिनटो मे बनि जेतैक यार। ले एक साँस मे पारकर  
आधा बोटल। खांटी माल छैक। ई कहैत ओ एगो बोटल बेताल दिस  
बढ़ा देलथिन। बेताल पड़ले पओलनि। एके निसास मे दू तिहाइ पा-  
क चुरठक दम्मा टनलनि ओ कथा कहबाक भंगिमा बना आसन जमओ  
लनि। खखास कय कंठ साफ करैत ओ बजलाह—ई थिक उत्तर महा-  
भारत-कथा, तोहर परिचिते डा० न्यास विरचित।

शरसज्या पर पड़ल पड़ल भीष्म पितामह सोचि रहल छलाह जे ओ  
व्यर्थक अपटो खेत मे मारल गेलाह। हुनका अहि संकट मे नहि पड़बाक  
चाहैत छलनि। ने धीया ने पुता अपन पेट त कुकूरो पोसिए लैए।  
राजा कौरव रहओ वा पाराडव हुनका कतौ दू रोटी आरामे सं भेटितनि।  
नहि जं युद्ध मे उतरबे केलाह त निरर्थक सिद्धान्त वादी नहि बनितथि।  
शिखंडी के देखि अस्त्र त्याग नहि करितथि। पाण्डव सभ त आरो बढ़का  
अन्यायी अइ।

सैं की मीता ? सभ दिन सुनैत आयल छो जे अन्यायी अत्याचारी  
छल कौरव सभ !

आ तौ ताइ सूनल कथा केँ ब्रह्मवाक्य मानि लेलह। बाबा वाक्यम्  
प्रमाणम्। अर्थ हो, आचार्य द्रोण, कर्ण, जयद्रथ आदि महारथी केँ कि छल  
सं नहि मारल गेलैक ? द्रौपदी सन बहसल माजग कतौ भेटतह। कहवी  
छइ ने जे सैंया भेल कौतबाल आब हम नगटे सुतबैं ना। से पाँच टा  
पति रहथिन तैं धरती पर पएरे ने पड़नि। कहू त भला-ओ कतो दुर्योधन  
केँ कहथिन जे आन्हरक बेटा आन्हरे होयत छैक। देओर सं लोक हंसी-

ठट्टा करितो अछि परंच शसुरक प्रति एहन कमेन्ट। सपरतोब त कम नहि  
छलनि। आ खेँण छलाह पाण्डव लोकनि। बहुत पक्ष ल केँ भइयारा  
मे मारि-दंगा। हम पुत्रेत छियह जे कर्ण त भेलाह अवैध संन्तान परंच  
धर्मराज आ हुनक चारु भाइ कि अपने बापक जनमल रहथिन ? बापे  
पितृक जन्म केना भेल रहनि ? बाउ कने ज्ञान माक योग दियौक तखन  
ने बुझबैक। ई सभ कुनू हमर मन गढन्त नहि थिक, डा० न्यास के  
भर्सन थिकनि जे सर्वविदित अछि।

तखन त ठोके हेबाक चाही। असल मे मोता हम कने मूड मे छी  
ने। आगा कहूक।

बेताल राज फेर कने मदिरा पेटस्थ केलनि आ चुरठक दम खिचि  
धुआ छोड़ैत आरंभ केलनि—पितामह फेर युद्ध करबाक घोषणा केलनि।  
तखनो बहुतरास योद्धा सभ कात करोट मे बांचल छल, बहुतो विदेश मे  
छल। नारो आ युवक लोकनि छउ। ओ सभ केँ संगठितक युद्ध  
करबाक एलान केलनि। जखन ई समाचार पाण्डव दल मे पहुँचल त  
ओ लोकनि मुह मे धान देखि त लाबा होइन। ता बीच कुटिचाली कृष्ण  
उपस्थित भेलाह आ हिनकेँ सलाह सं पितामह के 'बीर-रत्न' सम्मा पोषधि  
सं विभूषित कएल गेल। आ जेना कि कहवी छैक जे बुढ़ भेने लोक दूरि  
जाइए सहए हाल पितामहक। ओ किल्लु दिनधरि त मओन धारण केने  
रहलाह आ पश्चात् पाण्डव लोकनि केँ अनुशासन पर्वक ज्ञान देमय लगल-  
थिन। आये थे हरिभजन को, ओटन लगे कपास !

अच्छा माता, ई अनुशासन पर्व वास्तव मे की थिक ? विक्रमादित्य  
प्रश्न केलथिन-अनुशासन पर्व ओ स्थिति भेल जाइ-मे आइन-कानून आ  
शासनक नाम पर विरोधी लोकनिके चुप-चाप समूल नष्ट कएल जाय।  
सर्व साधारण के एकर आभासो तक ने भेटैक। माने तेहन मांप रूप  
नियां जे भाको ने आबय अंगनिया।

ओ. के. मीता आब उठल जाय।



—कथा नोक नहि लगलह की ?

—एह, कहू त भला । सेहो पुछवाक बात भेलैक ? जानथि दिनकर दीनानाथ, धीयापुता सप्त, कथा त अपूर्व छैक आ ताइ मे डा० व्यास विरचित ।

—तखन भरिसक बोटल खाली ।

—असल बात सएह । आ लग-पास में कतौ भेटनिहारो ने ।

—से किएक ने रहतैक । लगे मे पसीबा रहै-ए । परंच से जं तोरा चलैत हो ।

—अरे सब चलैत छैक । तारी ने ?

—हं । आर तोरा त आइ बाहनो नहि छह । हमही बरू पहुंचा देवह ।

आ महाराजक अनुमति ल बेतालराज अनुशासन पर्वक अवसरपर विशेषरूप सं बनाओल अपन बकरी विमान जोतलनि आ दुनू बन्धु सवार भ पसीखानाक पथपर अग्रसर भेलाह !



## अमरावती उपकथा

मासदिनक फॉरेन टूर सं बेतालराज आइए फिरल छलाह आ तें अड्डा पर पहुंचबा मे बिल्स्व ओना एयरपोर्ट पर लैंड करबाक संगहि ओ टैक्सी पकड़लनि आ डाइरेक्ट अड्डापर विदा भेलाह परंच वाट ततेक ने जाम छलैक जे आर देरी भ गेलनि । हुनक आजुक पोशाको तेहन छल जे हठात चीन्हलो ने जा सकै छल । खदरक धोती-कुर्ता, माथपर खजवा टोपी आ आँखिपर वेश पैघ करिया चश्मा । ई बात फराक भेल जे समय दोसर साँझ छलैक आ अन्हार नोक जकां भ गेल छलैक । अड्डा पर पहुंचिते देखैत छथि जे महाराज विक्रमादित्य कएक टा बोटल खाली क चुकल छथि । ओ गाछक जड़ि मे ओठठल मोहिनी छाप बोड़ी धुकैत मूड मे गाबि रहल छलाह—मेरे सपनो की रानी कब आएगी तूं ।

बेताल एहि रंग कें भंग करैत महाराजक अभिवादन केलथिन—गुड इवनिंग मिस्टर-मिस्टर १०८ मिस्टर हिज हाइनेस महाराजधिराज सरताज विक्रमादित्य ।

महाराज पहिने त चौकलाह परंच पारखो हेवाक कारणे चीन्हबा मे देरी नहि भेलनि । ओना बेतालक नव भेष-भूषा देखि अचरज अवसे भेलनि । ओ शान्त स्वर जबाब देलथिन जे नीक मन स कहने होअह त तोरो गुड इवनिंग । जं अधलाह मन स कहने छह त तोरा गुड इवनिंग, तोरा वाप कें गुड इवनिंग, तोरा परबाबा के

—नो नो । नो मोर डीयर । खर्च पर कटौती कएल जाय । दोसर ओ लोकनि ताइठाम पहुंचि चुकल छथि जाय ठाम बेतारो द्वारा खबरि नहि पठाओल जा सकैछ । चौअनियां मुस्कोक संग बेताल कहलथिन ।

श्रीमान महाराज विक्रमादित्य माथ उठा कें बेताल दिस तकलनि आ बजलाह—ओह ! केहन दीव मूड बनल छल परंच ई हराशंख सब बिगाड़ि देलक । बुझि पड़ैए जेना मालो खांटी नहि हो ।

बेताल के हंसी लागि गेलनि आ ओ ठहक्का मारि हंसय लगलाह । महाराज पपनी मिलमिलेलनि आ मौह तनि गेलनि । ओ चार्जक मुद्रा मे बजला हंसलह किएक ? किछु आँखि देखलह ने की ?



एहि बीच बेताल के तम्बाकू रगड़ल भ गेल छलनि ओ फटोफट थप-  
डिया के ठोरस्थ केलनि आ बजलाह—सुनल जाओ महाराज—लोक जं  
देखैत अछि त आखिए सं तें ई कुनू युगुतगर प्रश्न नहि भेल । दोसर बात ई  
जे आव त कुनू इमरजेंसी छैक नहि जे हंसला सन्ता लोक के ऐरेस्ट क लेल  
जेतैक आ जहल मे बन्न क देल जेतैक । तेसर बात, अपने खांटी मालक  
बात कएल ए । से जखन आइ-कालि ओही जन्तु खांटी नहि होइ-ए,  
जकरा मनुख कहल जाइ छइ, त मालक कथे की ?

—कूनठामक बात कहैत छह ?

—ओहीठामक जकरा देवलोकहुं सं पवित्र भूमि मानल जाइत छैक आ  
समस्त पौराणिक ग्रंथ मे जकर चर्च नहि गुणगाणी छैक—माने जम्बूद्वीपक  
भारत खंड ।

—तकर माने भेल जे तौ ओहीदेशक भ्रमण मे गेल छलाह ?

—निश्चित, निर्विवाद । जकर दर्शन लेल देवताओ सभ लालायित  
रहैत छथि आ विभिन्न योनि मे जन्म ग्रहण कय एहि पवित्र भूमि पर  
विचरण करैत छथि, तकरा देखैक लोभक संवरण जं ईहो अधम नहि क  
सकल त दोखे की ? ओना एहि बात मे कतेक सत्यता छैक से के कहत ?  
परंच एहन गप ओहि देशक लोक सभ बजैत अछि आ पोथी मे त छैक ।

महाराज मूढ़ मे छलाहे । स्वभावतः ओ सोचलनि जे आइ बेतालो  
मूढ़ मे अइ आ तें एकरों सं नीक कथा सुनल जा सकैए । ओ चट द  
एगो 'ओल्ड स्मगलर' बेताल दिस बढ़ओलनि । बेताल सखेद आपस क  
देलनि आ अपन जवाहरकोटक तरका जेवी सं चाकलेट सन किलु बहार  
कय बजलाह—आइ हमरा लग ओही पवित्र भूमिक पवित्रतम भू-खंड  
मिथिला देशक पवित्र आ प्रसिद्ध बुटी अइ । ओना जलक अभाव मे  
इ घोंट त अवसे ल लेव परंच बेसी नहि ।

ई कहैत ओ पत्नी खोलि टप द गोली मुंह मे ध लेलनि आ एगो  
अधिपलहा बेताल सं एक घोंट पोबि गुलगुला के घोंटि गेलाह आ अपन  
परमानेंट आसन दुकन्हा पर जा के बैस रहलाह । फेर कुर्ताक जेवी  
सं चुनैटी बहार क जुमगर सं तमाकू वनओलनि आ ठोरस्थ केलनि ।  
महाराज अचरज आ जिज्ञासा भरल नजरि सं बेतालक एहि नव आ  
विचित्र कृया-कलाप क अवलोकन करैत छलाह—से बात बेतालो लक्ष्य  
केलनि । ओ महाराजक जिज्ञासा शान्त करैल लेल बुभुक्षित कहलथिन—

बेताल कथा

पहिल बुटी जे हम खायलए ने, तकरा ओहिठामक लोक शंकर बुटी कहैत  
छैक । ओना आइ-कालिक लोक मे देब-पितरक प्रति आस्था रहलैक नहि  
आ तें एकर नव नामकरण कएल गेलए—सिद्धी । सिद्धीक माने भेल  
सकल सिद्धि के दाता । आ दोसर खेप जे वस्तु हम तरह्थी पर रगड़ि  
ठोरस्थ कएलए—से थिक नौलेज पाउडर, यानी ज्ञान अथवा बुद्धिबद्धक  
बुटी । एकर नियमित सेवन सं कुशाग्रता, प्रसूतपन्नमत्तित्व, तर्कशक्ति,  
आदि मे पर्याप्त वृद्धि होइत छैक । ओहिठामक लोक के एहन दृढ़ विश्वास  
छैक ।

—आ ई पोशाक ?

—हा हा-हा-हा । अपने के एखन तक सेहो ज्ञात नहि ? महाराज,  
अपने कहियो इसराज वन्हने छी ?

—सभ बर्ष बन्हैत छी ।

—किएक ?

—सर्प-दंश सं मुक्तिक निमित्त—विधान त इएह छैक ।

—राइट यू आर ।

—फेर स्लेच्छ भाषा ...

बुद्धि पड़ैछ जेना अपने के जनता सरकार जकां एहि भाषा सं एलर्जी  
हो । खैर, एहि पोशाक मादे पुछने रही ने । त सुनल जाय—ई पोशाक  
पहिरि अपने नेता बनि जाउ । नेता-माने देश-सेवक, लोक-सेवक, ज्ञान-  
वान-बुद्धिमान आ जतबा से इच्छा हो । आ फेर जते अपकर्म-कुर्म  
करबाक हो से ठाठ सं करैत रहू । सुरा-सुन्दरीक भोग, स्वर्ण संचय,  
स्वजन-पोषण आ शत्रु हननक योग माने जे जे मन हो बिना कुनू  
दुविधाक क सकैत छी आ अपने विदेह जकां समस्त दोष सं मुक्त रहब ।  
ओना त कुसोंक स्थान प्रधान छैक परंच दोसर स्थान एकरे छैक ।  
ओना एहि पोशाक आ कुर्सी मे अन्योन्याश्रय सम्बन्ध छैक । दुनू सम-  
गोत्री थिक । तें एहि पोशाक धारी आ कुर्सीक अधिकारी जे केओ किएक  
ने हो ओकरा मे समानता रहिते छैक मनहि ओकर कार्य पद्धति से कतबो  
पार्थक्य किएक ने होइक । उदाहरण स्वरूप अमरावतीक पहिलुक शासक  
आ वर्तमान शासक के लेल जा सकैक । पहिने गोत्रवाद आ चमचावादक  
प्राधान्य छल आ आव वर्णवाद आ भाषावादक प्राधान्य छैक । जहाँतक  
जनताक प्रश्न अइ से जनता थिक बकरी । ओकरा आगा मे कने हरियर

बेताल कथा



घास अथवा आमक पल्लव ओगारि दियौक ओ अहांक भैट ६६ दिस पपनीयो अलगा कें नहि ताकत ।

—परंच ई नेता लोकनि त लोक कें बड़ आध्वासन देने छलथिन ?

—कारण तखन ई लोकनि कुसी बिहीन छलाह । कुसी भेटिते बिसरि गेनाइ स्वाभाविक । आव कैसी तेरी रंगा ! दोसर बात जे इही लोकनि त कुनू ने कुनू रूप मे पुरने दल सं सम्बद्धे छलाह । रक्त सम्पर्क ओही बंशक छथि ! आ तेसर बात जे बिलाड़ि जं माछक रखवार हो त परिणामक कल्पना सहजहि कएल जा सकैक । ओना एगो काज ई लोकनि खूब जोर शीर सं क रहल छथि । प्रति मिनट एगो क कमीशन बैसा रहल छथि ।

—कमीशन माने ?

कमीशन माने कमीशन । यानी कमीशन—देवभाषा मे ।

—ओ हं हं कमीशनम् । सएह ने कहल ।

महाराज कमीशनक अर्थ बुझने होथि वा नहि परंच, बुझवाक बहना अबसे केलनि, जे बेताल के बुझै मे देरी नहि लगलनि । महाराज फेर प्रश्न केलथिन—परंच एहि कमीशन माने कमीशनम् केर प्रयोजन ?

प्रयोजन ! विरोधी ! सेफाया । आरकी विरोधी नहि रहने नपुंसक जनता सं तरुता पलटल हेतैक नहि ।

बुझि पड़ै-ए जे तोहूँ पूर्वाग्रह व्याधि सं प्रसितछह । हमरा विचारे ओहिठामक जनता कें केओ निरपक्ष लोक नपुंसक नहि कहि सकैछ । दोसर आजादीक नामे ख्यात एहि बेरक घटना जनरणक जागरूकताक प्रत्यक्ष प्रमाण थिक । ओकर स्वाधीनताक प्रति आगाध प्रेम तथा अपन शुभचिंतक के चीन्हवा पर संदेह किन्नहुं नहि कएल जा सकैछ ।

बेताल राज तमाकू थुकरैत बजलाह—देखल जाय श्रीमान् ! ओना त अपने जे कहवैक से सत्य हेबेटा करतैक जेना कि ओइ देशक नेता लोकनि जे बजैत आ करैत छथि—सभ उचित विधिसम्मत तथा देश आ लोक—कल्याण कारी होइत अइ । परंच सत्य त ई थिक जे लोक भंडिया घसान होइए । एगो छोट अंश कें जे अपन बाट अपनहि सिरजैत अगुआ रहल-ए जं छोड़ि देल जाय त बाँकी जनता अपन शुभचिंतक के मिसियो भरि नहि चिन्हैए । ई एगो विडम्बना छइ या समयक चालि कहि सकैत छी जे लोक अपन एगो शत्रु के क्षमताच्युत केलक आ ताही लाखें दोसर शत्रु क्षमता हथिया लेलकै । रहल गप स्वाधीनता के से जनता एखनो इ नहि बुझै-ए जे

बेताल कथा

स्वाधीनता कून चिड़ैक नाम थिक ? देश की आ ककर छैक ? ने तं एक दिस लोक कें पोवै लेल स्वच्छ पानियो ने भेटैत छैक ताहीठाम अमरावतीक शोभा दिन दुन्ना राति चंगुन्ना बढ़ि रहल ए । पहिनहुं समस्त कार्य मे आदिशक्ति लालपरीक दोहाइ देल जाइत छल, दधीचिक नामोबार कएल जाइत छल, आइयो तहिना भ रहल ए ।

—लगै-ए जे तोरो सिद्धि प्राप्त भ गेल छह । कहाँ चर्च भ रहल छल जम्बूद्वीपक भारत खंडक आ कहाँ स आवि गेल अमरावती आ ताइ पर सं लाल परी ।

बेताल बिहुंसैत बजलाह—महाराजन सिद्ध त हमरा प्राप्त भेले अछि आब देखाचाही जे अपने कें कहिया धरि प्राप्त होइछ । अपने जं कने ज्ञान म्नाक योग द क देखिएक त सब बुझि जेबैक । भारत खण्डक राजधानी आइ कालि अमरावतीक नामे ख्यात अछि आ ओहिठामक रहनिहार अपना के देवतुल्य बुझैत अछि । लोकक प्रयोग अमरावती सं बाहर रहनिहारक लेल कएल जाइछ । बोतल मे एखनी प्रचुर माल बचल अइ कने पेटस्थ करल जाओ तखन लालपरी कें चीन्हवा मे सेहो भाडठ नहि रहत । ओना अपनेक सुविधार्थ हम व्याख्या कए रहल छी—आइ सं बर्ख तीसेक पहिने जखने देवसुर संग्राम मे देवगण विजयी भेलाह आ असुरगण पड़ा गेल तखन पाँचोपुर सं पवित्र माटि आनि, देश आ देश वासीक कल्याणार्थ परम दक्ष शिल्पी द्वारा एहि आदिशक्ति लाल परीक विशालकाय प्रतिमाक निर्माण कराओल गेल आ अमरावतीक प्रमुख आलय मे प्रतिष्ठापित कएल गेल । आवत एहि प्रतिमाक नाना रंगक नकल जहाँ-तहाँ पायोल जाइ-ए । आ हमरा जनतवें देश आ देशवासीक लेल सभसं पैघ घातक इएह लालपरी थिक जकरा बले देशक मुष्टिमेय लोक मनमोजो करै-ए आ मोछपर ताव फेरै । तें जाधरि एकर विनाश नहि हेतैक ताधरि देश जनक कल्याण असंभव छैक ।

—आ दधीचि !

—दधीचि ओ भेलाह जे देवगणक विजय लेल अपन अस्थिधरि दान क देल । ओही अस्थि सं ने महाबजूक निर्माण भेल छलैक । भरिसक बेचारे सोचने छलाह जे देवगणक द्वारा हुनक देश आ देशवासीक कल्याण संभव होएत । जं बेचारे के पता रहितनि जे हुनक अस्थि सं बनाओल अस्त्र हुनके देशवासी पर प्रयोग कएल जायत त जानि ने ओ कौ करितथि ।

बेताल कथा

३६



एहि मध्य बेताल फेर तमाकू चुना ठोरस्थ केलनि आ अपन दहिना हाथ मे बान्हल शिको घड़ी देखलनि त बारह बाजि रहल छलैक। ओ चोट्टे टुकन्हापर सं कुदला। महाराज डरे चौकि गेलाह आ धरफरा कें उठबाक क्रम के कएक भटका खसलाह ता बेताल पकड़ि लेलकनि। महाराज अपन पोन माड़ैत सहानुभूतिक शब्द मे बेताल सं पुछलथिन - चोट त ने लगलह ?

बेताल के हंसी लागि गेलनि।

महाराज आगा बजलाह—हमरा त भेल जे ओते उपर सं खसलाह ताइ पर कीदन खा लेने छलह। तेने हम सतत स्वदेशी चीजक व्यवहार करैत छी।

बेताल खलिया भेट-69 आ ओल्ड स्मगलरक बोतल के निहारैत कहलथिन—नहि राजन, हमर कनेको चोट नहि लागल। नेने सं कूद-फानक अभ्यासी छी न। स्कूल लाइफ मे कएक खेप हाइजम्प मे मेडल भेटि चुकल अइ। असल मे बारह बाजि गेलैक आ आइ बिमानो नहिये अइ। दोसर घर मे पत्नी आ धीया-पुता सेहो प्रतीक्षा मे होएत।

—बिमानक कून चिन्ता ! हम अपन गर्दभ बिमान सं पहुंचा देबह। दोस्तीनी सं सेहो भेंट केनाइ कते दिन भ गेल।

—गर्दभ बिमान आ राजा विक्रमादित्य के।

—नहि बुझलह ? अनुशासन पर्वक अवसर पर विशेषरूप सं बनबने रही। जतय कुनू सभा-समावेश मे जाइ त एही बिमान सं आ एकरे उदाहरण लोक के दियेक। 'गदहा' कते अनुशासित जन्तु थिक। कतबो बोझ लादि दियो, ई कानो ने पटपटाओत। जते कतौ छोड़ि दियोक घास पात खा तृप्त भ जैत। कहियो कुनू माछ वा दाबी नहि राखत। आ स्वभावतः हमर प्रिय पात्र अइ। ई कहि महाराज बोतलक अवशेष के समाप्त कएलनि।

बेताल कहलनि—बुझि पड़ैए जे तोरो ज्ञान चहु जनमि गेलह।

ताबीच महाराज विक्रमादित्य अपन गर्दभ बिमान जोतलनि आ दुनू बन्धु ओहि पर सवार भेलाह। महाराज गदहाक लगाम घेने टिकटिक ओलनि आ गोत गाव लगलाह-चल-चल-चल मेरे हाथी, ओ मेरे साथी।